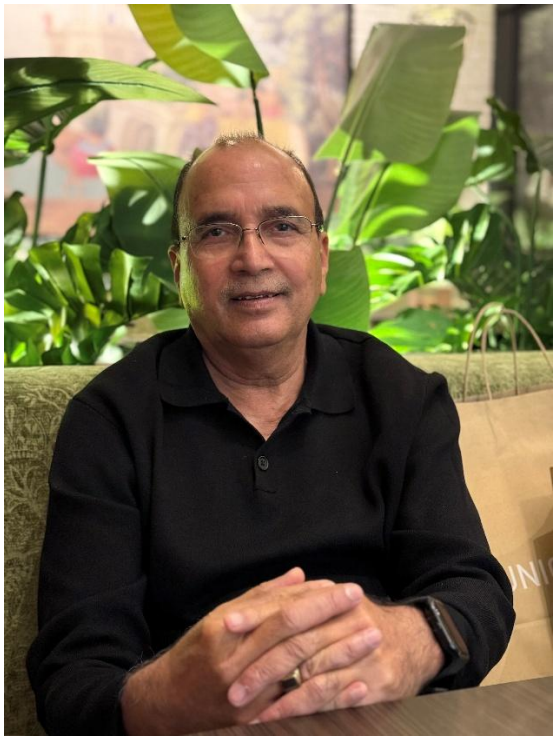

माधव हाड़ा

माधव हाड़ा प्रतिष्ठित साहित्यिक आलोचक और शिक्षाविद् हैं। उनकी रुचि के प्राथमिक क्षेत्रों में मध्यकालीन साहित्य और इतिहास शामिल हैं। उनकी उल्लेखनीय कृतियों में से एक, मीरा बनाम मीरा (2020), उनकी प्रशंसित हिंदी पुस्तक 'पचरंग चोला पहर सखी री' (2015) का अंग्रेज़ी अनुवाद है। यह पुस्तक मध्यकालीन भक्ति कवयित्री मीरांबाई के जीवन और समाज की पड़ताल करती है। उन्होंने भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में फैलो के रूप में कार्य किया है। उनका शोध विनिबंध,' पद्मिनी: इतिहास और कथा-काव्य की जुगलबंदी' (2023), संस्थान द्वारा प्रकाशित किया गया था। हाल ही में, माधव हाड़ा ने 'भक्ति अगाध अनंत' नामक भारतीय भक्ति कविता का एक संचयन संपादित किया है। संचयन भारत के विभिन्न क्षेत्रों की भक्ति कविताओं का व्यापक चयन प्रस्तुत करता है। उन्होंने 'कालजयी कवि और उनका काव्य' नामक एक श्रृंखला का संपादन भी किया, जिसमें कबीर, रैदास, मीरां, तुलसीदास, अमीर ख़ुसरो, सूरदास, बुल्लेशाह, गुरु नानक, जायसी, रहीम, सहजोबाई, लालन फ़क़ीर, नरसी मेहता, अक्क महादेवी, ललद्यद, दादूदयाल, रसखान, आंडाल, नामदेव, बिहारी और विद्यापति जैसे कवियों की रचनाएँ शामिल हैं। उनकी अन्य महत्त्वपूर्ण मौलिक कृतियों में 'सहजोबाई: जीवन भक्ति और काव्य' (2024),' पुतली ने आकाश चुराया' (2024),' वैदही औखद जाणै: मीरा और पश्चिम ज्ञान मीमांसा' (2023), 'देहरी पर दीपक' (2020), 'सीढ़ियां चढ़ता मीडिया' (2012), 'मीडिया, साहित्य और संस्कृति' (2006), 'कविता का पूरा दृश्य' (1992) और 'तनी हुई रस्सी पर' (1987)। उन्होंने 'सुभद्राकुमारी चौहान की संपूर्ण कविताएँ' (2023),' सौने कट न लागे' (2022),' एक भाव-अनेक नाम' (2022), 'मीरां रचना संचयन' (2017) और 'कथेतर' (2017) आदि का संपादन भी किया है।

माधव हाड़ा कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों के समानि हैं, जिनमें केके बिड़ला बिहारी पुरस्कार, राजस्थान साहित्य, भाषा और संस्कृति अकादमी का संस्कृति सम्मान, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार का भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कारऔर राजस्थान साहित्य अकादमी का देवराज उपाध्याय पुरस्कार शामिल हैं। वे भारतीय उच्च अध्ययन, शिमला की पत्रिकाओं 'चेतना' और 'हिमांजलि' के संपादक भी रहे हैं।

राजस्थान सरकार की उच्च शिक्षा सेवा के साथ 30 से ज़्यादा वर्षों के जुड़ाव के साथ, उन्होंने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में हिंदी विभाग के आचार्य और विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। संप्रति वे साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली की साधारण परिषद् और हिंदी परामर्श मंडल के सदस्य हैं।